काव्यमय

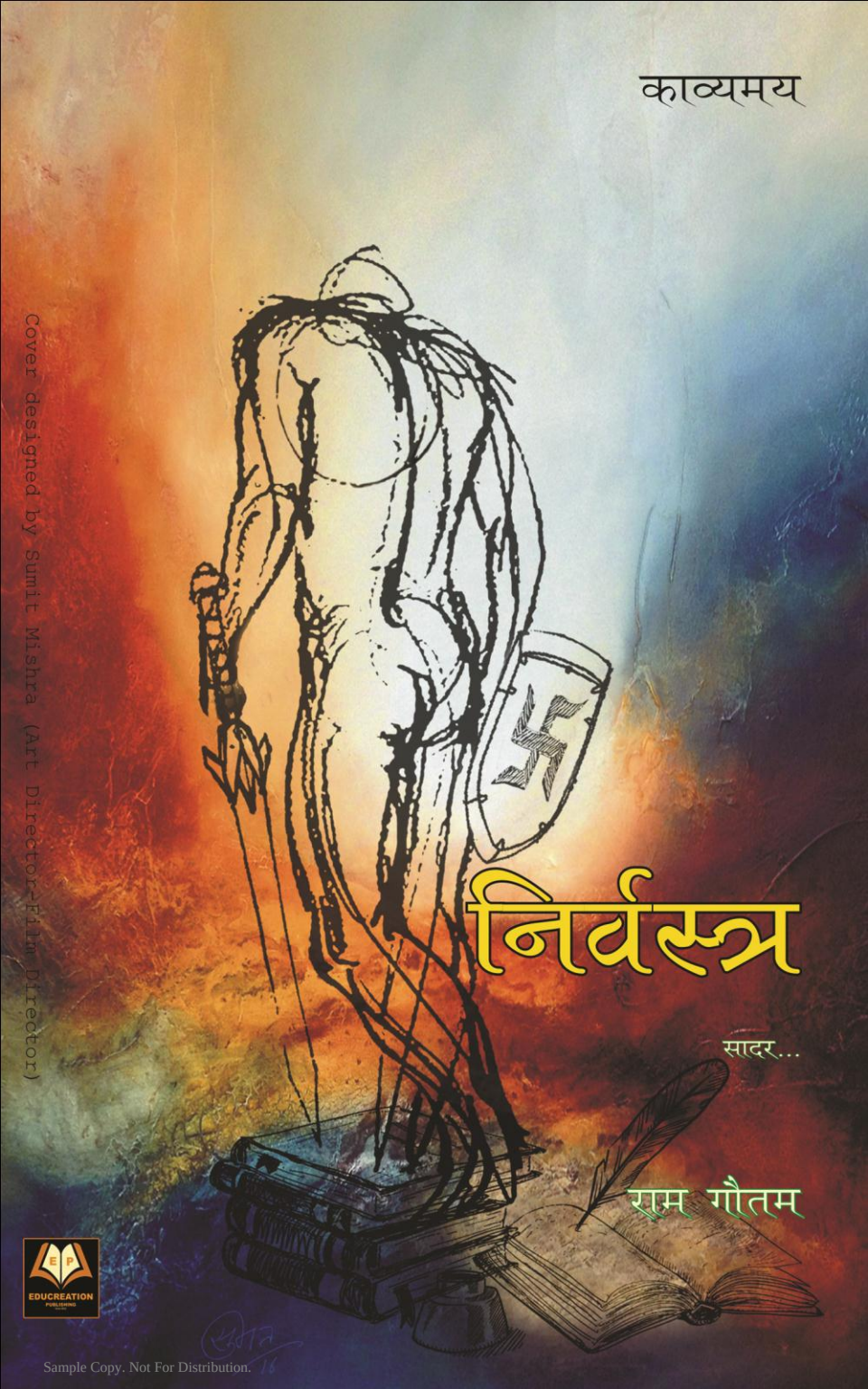

निर्वस्त्र

सादर...

राम गौतम

EDUCREATION PUBLISHING

Cover designed by Sumit Mishra (Art Director-Film Director)

Sample Copy. Not For Distribution.

निर्वस्त्र

Sample Copy. Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© 2017, राम गौतम

प्रथम संस्करण

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंद या खुले किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं।
इस पुस्तक का आंशिक रूप में पुनः प्रकाशन या पुनः प्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुनः प्रस्तुत करने की पद्धति अपनाने, इसका अनूदित रूप तैयार करने अथवा इलैक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

कवर डिज़ाइनः सुमित मिश्रा (कला निर्देशक – फ़िल्म निर्देशक)

सम्पर्कः ईमेलः raamgoutam@gmail.com

ISBN: 978-1-61813-580-3

Price: ₹ 240.00

इस पुस्तक में प्रकाशित विचार रचनाकार के अपने हैं और किसी भी रूप से प्रकाशक की नीति को प्रकट नहीं करते।

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution.

काव्यमय

निर्वस्त्र

राम गौतम

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

सादर समर्पित

श्री गुरुदेव

व

पूज्यनीय माता-पिता

Sample Copy. Not For Distribution.

प्राक्कथन

धरती पर पैर रखते ही, मनुष्य लेन–देन, जोड़–घटाव के व्यापार से जुड़ जाता है... जैसे–जैसे जीवन–यात्रा आगे बढ़ती है, कारोबार भी बढ़ जाता है...

यात्रा के दौरान बहुत कुछ बटोरता है, संचय करता है, कुछ व्यय भी करता है; अंततः यात्रा समाप्त होते ही, अचानक उसका सब छूट जाता है। सारी कमाई, पूँजी, धन–दौलत, ऐश्वर्य, यश–अपयश, मान–प्रतिष्ठा सब कुछ, अपनी पीढ़ी के सुपुर्द कर जाता है।

संघर्षमयी जीवन में मनुष्य ही एकमात्र प्राणी है, जिसने वास्तव में इस धरती को धरती होने का गौरव प्रदान किया है। धरती 'मातृत्व' का सुख महसूस करती है।

बड़े–बड़े संत, ज्ञानी, महात्मा सदैव 'काम–क्रोध–मद–लोभ' को अवगुण के रूप में बखान करते रहे हैं, लेकिन वास्तविकता यही है कि उपरोक्त चार अवगुणों में से एक, 'काम' को गुण मान कर अगर उनके जनक ने उन्हें जन्म न दिया होता तो, वे उपदेश की बातें कहाँ से करते?... लिखने का तात्पर्य है कि आज हम सब जिस धरातल पर खड़े हैं, वह 'काम–क्रोध–मद–लोभ' की ही देन है। हाँ, 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।

फ़िल्मों के अलावा, काव्यमय रचनाएँ ~ जो कि सन् 2000–2016 के मध्य लिखीं गईं; कृति **'निर्वस्त्र'** में अब तक की जीवन–यात्रा में मिले सुखद–दुःखद अनुभवों, सीख, ज्ञान, स्नेह, राग, द्वेष, मिलन, बिछोह, यश–अपयश, हानि–लाभ, मान–अपमान, इत्यादि बहुमूल्य–रत्नों का संचय है।

त्रुटियाँ क्षमा प्रार्थी!

~ राम गौतम

Sample Copy. Not For Distribution.

अनुक्रमाणिका

1.	भगवान्	...	1
2.	पहली बार	...	2
3.	महँगाई दिवस	...	3
4.	चितेरा	...	4
5.	घड़े को चाहिए कि	...	5
6.	मंशा	...	6
7.	निर्वस्त्र	...	7
8.	प्रश्न	...	9
9.	मज़ा आता है	...	11
10.	फ़ितरतन	...	12
11.	हरे रंग की उम्मीद	...	13
12.	खरोंच	...	15
13.	प्यार	...	16
14.	कतरन	...	18
15.	खोटे सिक्के	...	20
16.	बाप Vs बेटा	...	22
17.	सबक	...	24
18.	सफ़ेद कौआ	...	25
19.	विश्वासं फलदायकं	...	28
20.	पति, अर्थात्...?	...	30
21.	शहर... मुम्बई	...	32
22.	अस्वीकृत	...	33
24.	केन्द्र–बिन्दु	...	35
25.	बलात्कार	...	36
26.	ऊर्जित	...	38
27.	कलई	...	40
28.	मानसून	...	41
29.	मुम्बई कोणाची?	...	43
30.	प्रयोगशाला	...	54
31.	राम का रावण	...	56
32.	गर्व से...	...	58

Sample Copy. Not For Distribution.

33.	करवट	...	60
34.	संबंध–सट्टा	...	62
35.	मन तू...	...	64
36.	सभ्य–असभ्य	...	65
37.	कारावास	...	67
38.	सैनिक – एक सुरक्षा कवच	...	68
39.	नाम	...	69
40.	जब शहर घुसे गाँवों में	...	70
41.	लोग	...	71
42.	आशा का अंकुर	...	72
43.	पीड़ा	...	74
44.	कर्म–काण्ड	...	75
45.	गुडविल	...	76
46.	पुरुष	...	77
47.	इन्सान बने रहना	...	78
48.	अस्तित्व	...	80
49.	नया साल	...	82
50.	आभार	...	85
51.	दरिद्रता	...	87
52.	नववर्ष–अंकगणित	...	89
53.	दिलकुमार	...	90
54.	ब्लैक	...	91
55.	अब	...	92
56.	सर्वगुण सम्पन्न	...	93
57.	दर्शन छोटे	...	94
58.	चिन्ता	...	100
59.	अक्लं न शक्लं	...	101
60.	बाई इन इण्डिया	...	103
61.	पुलिंदा	...	105
62.	काल्पनिक	...	107
63.	अपनापन	...	108
64.	बेमतलब	...	111
65.	योगी	...	114
67.	मझधार में समझदार	...	117
68.	पितृपक्ष	...	120

Sample Copy. Not For Distribution.

69.	परिवर्तन	...	121
70.	दुनिया	...	123
71.	माइ डियर डेथ	...	124
72.	लम्हा–दर–लम्हा	...	127
73.	मैंने देखा है...	...	128
74.	टैलेन्ट	...	130
75.	खुशी	...	132
76.	पहचान	...	134
77.	निंदिया रानी	...	135
78.	सफ़ेद सिगरेट में...	...	138
79.	गुरू	...	141
80.	चरण–स्पर्श	...	142

फ़िल्में व अन्य योगदान

81.	दम लगा... (दिल दोस्ती ऐट्सेटर)	...	144
82.	मोरे बाँके... (दिल दोस्ती ऐट्सेटर)	...	146
83.	पंचतत्वों... (दिल दोस्ती ऐट्सेटर)	...	147
84.	तिनका–तिनका... (टर्निंग 30!!!)	...	148
85.	मेरे नेशन... (द वर्ल्ड ऑफ़ फ़ैशन)	...	149
86.	पल छिन... (छत्रपति शिवाजी)	...	152
87.	दामिनी की यादें... (श्रद्धाजंलि)	...	154
88.	रामबाण – मुक्ति वटी... (इसक)	...	156
89.	रहनुमा... (बाथटब–करूँ तो करूँ क्या)	...	158
90.	तुम हो जिया के चैना... 1 (आफ़्टर द लास्ट लैक्चर)	...	160
91.	तुम हो जिया के चैना... 2 (आफ़्टर द लास्ट लैक्चर)	...	161
92.	काठ से मन... (चकल्लसपुर)	...	162
93.	सेंधमार... (सेंधमार)	...	163

Sample Copy. Not For Distribution.

भगवान्

यार, शिल्पी;
तू, बेकार शिल्पी!!!

औज़ार लिये हाथों में,
चल पड़ता है, सुबह~सवेरे,
पहाड़ों की ओर...
टटोहती निगाहें,
जानदार,
एक टुकड़ा पत्थर का;
कुछ चहलकदमी,
और;
परखती हथौड़ी...
जँचता है तुझे,
तेरे ही तलवों तले,
पत्थर का एक टुकड़ा!!
यार, शिल्पी;
तू, बेकार शिल्पी!!!

बोलते रहते हैं औज़ार तेरे,
घंटों~हफ़्तों~महीनों तक;
देता है एक शक्ल, तराश कर मुझे,
और फिर;
सौंप देता है,
आस्था के हाथों,
पहुँचा देता है मंदिरों में,
इन्सान की नज़रों में,
भगवान् बना देता है!
यार, शिल्पी;
तू, बेकार शिल्पी!!!
तू, मेरा भगवान्, शिल्पी!!!
⌖

Sample Copy. Not For Distribution.

पहली बार

हम रोये; जब, पहली बार!
रिश्तों में बँटे, मुस्कानों की तरह!!

मुस्काये; जब, पहली बार!
होंठों में घुले, मिसरी की तरह!!

हम चले; जब, पहली बार!
आँखों में खिले, फूलों की तरह!!

हम दौड़े; जब, पहली बार!
राहों को दिखे, अम्बर की तरह!!

हम गिरे; जब, पहली बार!
कलेजे को लगे, पत्थर की तरह!!

स्कूल चले; जब, पहली बार!
खिलौनों से कटे, पंखों की तरह!!

हम बिके; जब, पहली बार!
भट्ठी में तपे, सोने की तरह!!

हम टूटे; जब, पहली बार!
अपनों में दिखे, बेगानों की तरह!!

हम लुटे; जब, पहली बार!
दुनिया में दिखे, मसीहा की तरह!!

हम सोये; जब, आख़िरी बार!
ख़्वाबों को लगे, बेवफ़ा की तरह!!

Sample Copy. Not For Distribution.

महँगाई दिवस!!!

पर्व सारे, गर्व सारे,
तय दिवस, जयंती सारे,
महान्~भारत में हमारे!
उल्लास भरते या उदास करते;
बरस में बस, एक बार!
तय नहीं,
बस, एक विवश,
सस्ता सबसे;
महँगाई दिवस!!!

महँगाई!!!
बरस में, कई बार आये,
आ गई, मैं;
घर आकर बतलाये,
'ब्रेकिंग न्यूज़',
बन कर रहती,
हर मौसम में,
तन कर रहती!!!

आम~आदमी,
बना शिकार,
खा गई कितने,
बिना डकार,
घर–घर में है,
हाहाकार,
है कुछ–क्या,
इसका उपचार?!!!

Sample Copy. Not For Distribution.

चितेरा

दीवारों पे ज़ेहन की,
चिपकी गर्द के पीछे,
कुछ रंग,
तुम्हारे ख़यालों के,
उतार लाता है,
चितेरा~मन;
रोज़ाना रौशनी में,
तो कभी,
ग़ैरहाज़िरी में उसकी,
और;
पैलेट में आँखों के रख,
साँसों से भी नर्म एहसासों के,
अलग–अलग ब्रशों से,
शक़्ल देने लगता है,
नायाब,
ख़ूबसूरत,
सरापे को तुम्हारे,
और;
उससे लिपटी,
तुम्हारी सारी अदाओं को,
जिन्हें;
जाते–जाते तुम,
मिटा गईं थी,
उस रोज़,
कम्बख़्त ज़ेहन से मेरे!!!

Sample Copy. Not For Distribution.

घड़े को चाहिए कि...

जीवित है,
किसी जीवन में,
किसी जीवन के लिए,
इसलिए;
घड़े को चाहिए,
कि;
ठोकर से बचे!!!

रौंदा गया, जन्म से पहले,
कि मिट्टी था;
तपाया गया, जन्म के बाद,
कि कच्चा था;
सहेजा गया,
हर पल, हर ठौर पर,
कि नाजुक है,
इसलिए;
घड़े को चाहिए,
कि;
ठोकर से बचे!!!

मौन;
साधक की,
जल साधना है,
सीकर में, सागर की,
कल्पना है,

इसलिए,
घड़े को चाहिए,
कि;
ठोकर से बचे!!!
⌖

Sample Copy. Not For Distribution.

मंशा

घर करके बैठी है,
घर~घर में मंशा;
आँखों सी प्यासी,
झरोखों पे मंशा!

फटती पौ जैसी,
फटी एड़ियों में;
बदन पे आकाश के,
चिथड़े बादलों सी मंशा!

सरहदों को लाँघती,
फ़िज़ाँ में हवाओं सी;
मौसमी लिबासों को,
पहनती~उतारती सी मंशा!

कोख में धरती की,
बीजों की अँगड़ाई सी;
किसान की आँखों में,
लहलहाती सी मंशा!

जेबें टटोलतीं सी,
तनख़्वाहें दफ़्तरों की;
जेबों को तलाशतीं,
बाज़ारों की मंशा!

घर करके बैठी है,
घर~घर में मंशा;
आँखों सी प्यासी,
झरोखों पे मंशा!

Sample Copy. Not For Distribution.

निर्वस्त्र

मनुष्य बन गये हम,
क्योंकि;
वस्त्र पहनना सीख लिये हैं!
वैसे;
निर्वस्त्र जन्मे हैं हम सब,
इसलिए,
शायद;
सब कुछ,
निर्वस्त्र कर देने की,
आदत है हमें!!

युद्ध किये हमने,
तो;
शस्त्र निर्वस्त्र हुए!

ग्रंथ लिखे हमने,
तो;
लेखनियाँ निर्वस्त्र हुईं!

ठोकर लगी हमें,
तो;
विचार निर्वस्त्र हुए!

ठेस पहुँची हमें,
तो;
संस्कार निर्वस्त्र हुए!

रिश्ते बुने हमने,
तो;
स्वयम् निर्वस्त्र हुए!

Sample Copy. Not For Distribution.

मुक्ति चाही हमने,
तो;
आत्मा निर्वस्त्र हुई!

मनुष्य बन गये हम,
क्योंकि;
वस्त्र पहनना सीख लिये हैं!
वैसे;
निर्वस्त्र जन्मे हैं हम सब,
इसलिए,
शायद;
सब कुछ,
निर्वस्त्र कर देने की,
आदत है हमें!!!

Sample Copy. Not For Distribution.

प्रश्न

ईश्वर;
निर्धन के लिए,
वर्णित है...
क्यों?

भाग्य;
निर्धन के लिए,
अर्चित है...
क्यों?

आलस्य;
निर्धन के लिए,
संचित है...
क्यों?

कुण्ठा;
निर्धन के लिए,
निर्मित है...
क्यों?

सीमा;
निर्धन के लिए,
लिखित है...
क्यों?

मुस्कान;
निर्धन के लिए,
वर्जित है...
क्यों?

Sample Copy. Not For Distribution.

अश्रु;
निर्धन के लिए,
अर्जित हैं...
क्यों?

दुःख;
निर्धन के लिए,
निश्चित है...
क्यों?

सुख;
निर्धन के लिए,
अतिथि है...
क्यों?

डर;
निर्धन के लिए,
वंदित है...
क्यों?

क्षुधा;
निर्धन के लिए,
अर्पित है...
क्यों?

Sample Copy. Not For Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

ram goutam

one six zero eight one nine six seven

The journey began in 1986 from Gulwara, Katni, Madhya Pradesh, India. The dream of becoming a Lyricist in the Indian Film Industry was carried forward with the move to Mumbai in 1991 after graduation [B.Com.] from Rani Durgavati University, Jabalpur.

His profile as a Lyricist for films & television shows, until 'Nirvastra' was published, included:

Films:
Dil Dosti Etc (28.09.2007)
Turning 30!!! (14.01.2011)
The World of Fashion (19.04.2013)
Issaq (26.07.2013)
Chhatrapati Shivaji (02.08.2013)
Karu toh Karu Kya(a BathTub)(ready to release)
After the Last Lecture (ready to release)
Chakallaspur (ready to release) (Now at many Film Festivals)
Sendhmaar (ready to release)

Tv Series:
Top Ten (1997-99) Lucknow DoorDarshan
Yeh Kya Ho Raha Hai (2002-06) DD National, Metro
Mamta - Bandhan Rishton Ka (2005-08) Bhopal Doordarshan
Baahubali (2008-09)MahuaTv (2010-11)MahuaTv
Mangalsutra- Ek Maryada (2011-12)DD National
Adhikar- Ek Kasam Ek Tapasya (2015-16)DD National

Music Video:
Damini ki Yaadein (22.01.2013)
http://youtu.be/j5JF99YjoWo

Info Links:
http://www.youtube.com/user/RAMGOUTAM
http://www.ramgoutam.blogspot.in/

Contact:
raamgoutam@gmail.com

फ़ितरतन

लम्हा–लम्हा,
मिल कर,
ज़िन्दगी चुरा लेते हैं;
लम्हा–लम्हा,
मिल कर,
ज़िन्दगी बना देते हैं।

ज़र्रा–ज़र्रा,
कट कर,
दीवारें गिरा देते हैं;
ज़र्रा–ज़र्रा,
मिल कर,
दीवारें बना देते हैं।

क़तरा–क़तरा,
मिल कर,
आबादी मिटा देते हैं;
क़तरा–क़तरा,
मिल कर,
आबादी बसा देते हैं।

रेशा–रेशा,
खुल कर,
आबरू मिटा देते हैं;
रेशा–रेशा,
मिल कर,
आबरू छुपा देते हैं।

©
NIRVASTRA (Poetical)
all rights reserved with
RAM GOUTAM

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
POETRY
ISBN 978-1-61813-580-3
9 781618 135803 >

Sample Copy. Not For Distribution